

---

Shri Krishnashtakam

श्रीकृष्णाष्टकम्

Document Information

---

Text title : kRiShNASHTakam 5 madhwamAnasa

File name : krishna8-5.itx

Category : aShTaka, vishhnu, krishna, vAdirAja, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Author : vAdirAja

Transliterated by : <http://madhva.org>

Proofread by : Ambarish Srivastava, Rajani Arjun Shankar

Latest update : February 25, 2023

Send corrections to : [sanskrit at cheerful dot c om](mailto:sanskrit@cheerful dot c om)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 24, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीकृष्णाष्टकम्



रौप्यपीठकृष्णस्तुतिः

पालयाच्युत पालयाजित पालय कमलालय ।

लीलया धृतभूधराम्बुरुहोदर स्वजनोद्धर ॥

मध्वमानस-पद्मभानुसमं स्मरप्रतिमं स्मर

स्निग्ध-निर्मल-शीतकान्ति-लसन्मुखं करुणोन्मुखम् ।

हृद्य-कम्बुसमान-कन्धरमक्षयं दुरितक्षयं

चित्त संस्तुत-रौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ १ ॥

अङ्गदादि-सुशोभि-पाणियुगेन संक्षुभितैनसं

तुङ्गमाल्य-मणीन्द्रहार-सरोरसं खलनीरसम् ।

मङ्गलप्रद-मन्थदाम-विराजितं भजताजितं

तं गृणे वररौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ २ ॥

पीनरम्य-तनूदरं भज हे मनः शुभहेम नः

स्वानुभाव-निदर्शनाय दिशन्तमर्थि-सुशन्तमम् ।

आनतोऽस्मि निजार्जुन-प्रियसाधकं खलबाधकं

हीनतोऽज्झित-रौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ ३ ॥

हैमकिङ्किणि-मालिका-रशनाञ्चितं तमवञ्चितं

रत्नकाञ्चन-वस्त्रचित्र-कटिं घनप्रभया घनम् ।

कम्रनाग-करोपमूरुमनामयं शुभधीमयं

नौम्यहं वररौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ ४ ॥

वृत्तजानु-मनोज्ञजङ्घममोहदं परमोहदं

रत्नकल्प-नखत्विषा हृतहृत्तमःस्ततिमुत्तमम् ।

प्रत्यहं रचितार्चनं रमया स्वयागतया स्वयं

चित्त चिन्तय रौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ ५ ॥

चारुपाद-सरोजयुग्म-रुचामरोच्चय-चामरो-  
 दार-मूर्धजभार-मण्डल-रञ्जकं कलिभञ्जकम् ।  
 वीरतोचितभूषणं वरनूपुरं स्वतनूपुरं  
 धारयात्मनि रौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ ६ ॥

शुष्कवादि-मनोतिदूरतरागमोत्सवदागमं  
 सत्कवीन्द्र-वचोविलास-महोदयं महितोदयम् ।  
 लक्षयामि यतीश्वरैः कृतपूजनं गुणभाजनं  
 धिक्कृतोपम-रौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ ७ ॥

नारदप्रियमाविशाम्बुरुहेक्षणं निजरक्षणं  
 तारकोपम-चारुदीप-चयान्तरे गतचिन्त रे ।  
 (द्वारकोपम-चारुदीप-चयान्तरे गतचिन्त रे । )

धीर मानस पूर्णचन्द्रसमानमच्युतमानम  
 द्वारकोपम-रौप्यपीठ-कृतालयं हरिमालयम् ॥ ८ ॥


फल-श्रुतिः

रौप्यपीठ-कृतालयस्य हरेः प्रियं दुरिताप्रियं  
 तत्पदार्चक-वादिराज-यतीरितं गुणपूरितम् ।  
 गोप्यमष्टकमेतदुच्चमुदे ममास्त्वह निर्मम-  
 (गोप्यमष्टकमेतदुच्चमुदे भवत्वह निर्मम-)  
 प्राप्य-शुद्धफलाय तत्र सुकोमलं हतधीमलं (प्राप्यसौख्यफलाय)  
 (प्राप्यसौख्यफलाय तत्र सुकोमलं हतधीमलं ) ॥ ९ ॥


पालयाच्युत पालयाजित पालयाकमलालय ।  
 लीलया धृतभूधराम्बुरुहोदर स्वजनोदर ॥  
 इति श्री वादिराजतीर्थकृतम् श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ॥  
 रौप्यपीठकृष्णस्तुतिः

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

Proofread by Ambarish Srivastava, Rajani Arjun Shankar

——  
*Shri Krishnashtakam*

pdf was typeset on April 24, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

